गाजर की आधुनिक खेती

शीतल टाक
सहायक प्राध्यापक
उधान विभाग, भगवंत विश्वविध्यालय, अजमेर, राजस्थान

गाजर में भरपूर मात्रा में कैरोटीन और विटामिन ए पाया जाता है। कच्चे सलाद के रुप में गाजर बहुत ही फायदेमंद होता है। किसानों की सेहत और मुनाफे के लिए गाजर की खेती बहुत ही महत्वपूर्ण है।

जलवायु:

गाजर ठंडी जलवायु की फसल है। गाजर की उन्नत खेती के लिए 8 से 28 डिग्री सेल्सियस के बीच का तापमान सही होता है। ज्यादा गर्मी वाले इलाके में इसकी फसल नहीं करनी चाहिए।

मृदा:

दोमट मिट्टी गाजर की उच्च गुणवत्ता युक्त फसल के उत्पादन के लिए श्रेष्ठ है। इसके लिए मिट्टी को पूरी तरह से भुरभुरी कर लें। खेत में जल निकासी की उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिए। पानी के भराव की स्थिति में जड़ों के गलने और फसल खराब होने का खतरा रहता है।

बुआई का समय:

गाजर की बुआई का सही समय अगस्त से अक्टूबर के बीच का होता है। लेकिन गाजर की कुछ खास किस्म की बुआई के लिए अक्टूबर से नवंबर का समय भी श्रेष्ठ माना जाता है। इसे रबी के मौसम करें तो ज्यादा उत्पादन होता है।

खेत की तैयारी

जैसा कि हमने मिट्टी की जानकारी में बताया कि भुरभुरी मिट्टी को गाजर की खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है। अतः मिट्टी को भुरभुरा बनाने के लिए सर्वप्रथम दो से तीन बार हल से जुताई करनी चाहिए। उसके बाद 3 से 5 बार पारंपरिक हल से जुताई करना और अंत में पाटा फेरना इन क्रियाओं को इसी क्रम में करने से अपने खेत की मिट्टी को गाजर की बुआई के लिए और गाजर की अच्छी खेती के लिए आप सही तरीके से तैयार कर सकते हैं।

उन्नत किस्में और उनकी विशेषताएं

- **पूसा मेघाली:** गाजर की यह किस्म 100 से 110 दिनों में तैयार होती है। इसकी पैदावार 250 से 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इसकी बुआई अगस्त से सितंबर महीनें में की जाती है। इसमें कैरोटीन की मात्रा अधिक होती है।
- **पूसा केसर:** यह किस्म भी 110 से 110 दिन में तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार 225 से 250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इसकी बुआई अगस्त के अंतिम सप्ताह से सितंबर महीने में की जाती है।
- **हिसार रसीली:** यह किस्म 90 से 100 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार 250 से 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इसमें विटामिन ए और कैरोटीन की मात्रा अन्य किस्मों की तुलना में अधिक होती है।
- **गाजर 29:** इसकी पैदावार 200 से 250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। यह 85–90 दिनों में तैयार हो जाती

है। यह किस्म बहुत मीटा और स्वादिष्ट होता है।

- **चौंटनी:** यह किस्म 80 से 90 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार 150 से 200 क्विटंल प्रति हेक्टेयर होती है। यह मोटी और गहरे लाल नारंगी रंग की होती है।
- **नैनटिस:** यह किस्म 100 से 120 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार 200–220 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। यह किस्म खानें अधिक स्वादिष्ट और अधिक मीठी और दानेदार होती है।

बीज की मात्रा : 5 कि.ग्रा./है.

सिंचाई:

गाजर का खेत हमेशा नमी युक्त रहना चाहिए। सर्दियों के समय 8 से 10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करना फायदेमंद होता है । अगर मौसम में हल्की गर्मी है तो आप 8 से 10 दिन के अंतराल को कम करके 3 से 4 दिन का भी कर सकते हैं। खेत में पानी के निकास की उत्तम व्यवस्था हो और खेत की मिट्टी सूखे नहीं।

उर्वरक प्रबंधन:

जुताई के समय लगभग १०–१५ टन प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर की खाद का प्रयोग गाजर के अच्छे उत्पादन में सहायक होता है। बुआई के समय 70 किलोग्राम/है. नाइट्रोजन, फॉस्फोरस 40 कि.ग्रा./है. तथा ४० किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर उर्वरक की तरह प्रयोग करने से गाजर की अच्छी पैदावार होती है। बुआई के चार से 5 सप्ताह के बाद इतनी ही मात्रा में नाइट्रोजन का उर्वरक की तरह प्रयोग करना आपको गाजर की अच्छी पैदावार देता है। इसी तरह पोटाश पानी में घुलनशील होता है और पौधों तक पोषक तत्व के रूप में अच्छी तरह पहुंचता है। पोटाश से पौधे में फूल और फल दोनों ही स्वस्थ और ज्यादा मात्रा में आते हैं। नाइट्रोजन और पोटाश दोनों की मदद से स्वस्थ पौधों का विकास होता है और अच्छी और अधिक फसल की प्राप्ति होती है।

तुड़ाई व उपज :

लगभग ढाई से तीन महीनों में गाजर जड़ें विकास के लिए तैयार हो जाती है और औसतन 25 से 30 टन प्रति हेक्टेयर उपज हो जाती है।

कीट प्रकोप एवं प्रबंधन:

गाजर को वीवील (सुसरी) जैसिड व जंग मक्खी नुकसान पहुँचाते हैं।

1. गाजर की सुरसुरी (कैरट वीविल)

इस कीट के सफेद टांग रहित शिशु गाजर के ऊपरी हिस्से में सुरंग बनाकर नुकसान करते हैं। इस कीट की रोकथाम के लिए इनिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.लि./3 लिटर या डाइमेथेएट 30 ई.सी. 2 मि.लि./लिटर या इन्डोसल्फान 35 ई.सी. 2 मि.लि./लिटर का छिड़काव करें।

2. जंग मक्खी (रस्ट फलाई)

इस कीट के शिशु पौधों की जड़ों में सुरंग बनाते हैं, जिससे पौधे मर भी जाते हैं। इस कीट की रोकथाम के लिए क्लोरपयरीफॉस 20 ई.सी. 2.5 लिटर/हेक्टेयर की दर से हल्की सिंचाई के साथ प्रयोग करें।

लागत व लाभ

गाजर की लगभग 1 किलो की खेती के लिए 6 से 8 का खर्च आता है। अगर कोई व्यक्ति 1 किलो गाजर उगाता है तो उसकी लागत 6 से 8 के बीच आएगी। वहीं अगर हम बात कमाई की करें तो गाजर की कुछ किस्में एक हेक्टेयर में लगभग 150 क्विंटल तक उगाई जा सकती है। वहीं कुछ किस्मों की खेती लगभग 250 से 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से भी होती है। 75 से लगभग 90 दिन के मध्य तैयार होने वाली इस फसल की कीमत बाजार में अमूमन 40 प्रति किलो तक होती है। इस हिसाब से अगर हम देखें तो 1 हेक्टेयर से लगभग 7 लाख से 14 लाख रुपए कमा सकते हैं।